TATTVA PRACHAR CENTRE
BANGALORE

संस्कृत साहित्य सौरभ

C00677
57

वेणीसंहार

Gandhi Smarak Nidhi
Karnatak Shakha
, NEHRU CIRCLE
BANGALORE

015,2BHA
152wBN56;1
H.000677

TATTVA PRACHAR CENTRE
BANGALORE

संस्कृत-साहित्य-सौरभ 000677

३

भट्टनारायण-कृत

वेणी-संहार

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE........................
ACC. No. 9825
CALL No........................
BANGALORE-1.

श्री हरदयालुसिंह
द्वारा
कथा-सार

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
सम्पादित

१९५६
सत्साहित्य-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE....................
ACC. No....................
CALL No....................
BANGALORE-1.
H.000677
015,2BHA 152w3N56;

तीसरी बार : १९५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

...SMARAKA GRANTHALAYA
DATE........................
ACC. No.............................
CALL No......................
BANGALORE-1.
0C0677

संस्कृत साहित्य सौरभ

हमारा संस्कृत साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो जिसके संबंध में मूल्यवान सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परन्तु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर बहुत समय पहले हमने विचार किया था कि संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हिन्दी में प्रस्तुत करें और इस कार्य को संस्कृत-प्रेमी श्री हरदयालुसिंहजी से तभी प्रारम्भ भी करा दिया था। उन्होंने कई ग्रंथों का कथासार हमारे लिए तैयार कर दिया था। हिंदी के पाठकों की सेवा में उन्हींको सम्पादित करके उपस्थित किया जा रहा है। दुःख की बात है कि इस बीच हरदयालुसिंहजी का देहान्त हो गया और ये रचनाएँ उनके जीवनकाल में प्रकाशित न हो सकीं।

इस पुस्तकमाला से हिंदी के सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकें, इसलिए पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

तीसरा संस्करण

इस माला की पुस्तकें बहुत ही लोकप्रिय हो रही हैं और हमें हर्ष है कि कुछ पुस्तकों का तीसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। आशा है कि भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रेमी पाठक इन पुस्तकों को और भी चाव से अपनावेंगे।

—मंत्री

भूमिका

'वेणी-संहार' की कथा 'महाभारत' से ली गई है। इसका मुख्य प्रसंग भीम की प्रतिज्ञा है। कौरवों की सभा में जब द्रौपदी का अपमान किया गया था तब भीम ने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं दुर्योधन की जांघ तोड़ूंगा और उसके रक्त से द्रौपदी की वेणी बांधूंगा। इसी प्रसंग के आधार पर नाटक का नामकरण हुआ है।

नाटक वीर रस प्रधान है, परन्तु हास्य-रस को छोड़कर दूसरे रसों का भी इसमें प्रयोग हुआ है। हास्य-रस का अभाव होने के कारण इस नाटक में विदूषक नहीं है। इस नाटक का तीसरा अंक श्रेष्ठ माना जाता है। इसके लेखक भट्टनारायण हैं। पर वह कब हुए, इस बारे में बड़ा मतभेद है। विद्वान् लोग तीसरी शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक इनका समय निश्चित करते हैं। इस नाटक की अनेक प्रतियों में पाठ-भेद भी काफी मिलता है, परन्तु फिर भी इसकी महत्ता निर्विवाद है। काव्य साहित्य के अनेक लक्षण-ग्रंथों में इस नाटक से लेकर अनेक उदाहरण दिये गए हैं। 'वेणी-संहार' अनेक दृष्टियों से संस्कृत-साहित्य का गौरव है।

—सम्पादक

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.....................
ACC. NO.........................
CALL NO.......................
BANGALORE

वेणी-संहार

पूर्व-कथा

कौरवों और पांडवों की कहानी सब जानते हैं। उनमें आपस में बनती न थी। आपसी झगड़ों को दूर करने के लिए धृतराष्ट्र ने कुरु-राज्य को दोनों में बांट दिया। पांडव बड़े बली थे। उन्होंने अपने बाहुबल से दूसरे राजाओं को वश में कर के यमुना के किनारे एक विशाल राज्य स्थापित कर लिया और भगवान् कृष्ण की सलाह से राजसूय यज्ञ भी कर डाला। इस यज्ञ में भाग लेने के लिए भारत के सभी राजा आए। दुर्भाग्यवश इस यज्ञ में दुर्योधन का अपमान हो गया। उसका बदला लेने के लिए दुर्योधन ने एक षड्यंत्र रचा और अपने मामा शकुनि की सलाह से पांडवों को जुआ खेलने का निमंत्रण भेजा।

पांडव इस कपट-द्यूत में अपना सबकुछ हार कर बारह वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास के लिए चले गये। जब वे प्रगट हुए तो दुर्योधन को उनका राज्य लौटा देना चाहिए था, पर उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। अब पांडवों के पास युद्ध को छोड़कर और कोई मार्ग नहीं रहा, परन्तु श्रीकृष्ण ने एक बार फिर संधि के लिए प्रयत्न कर देखने की सलाह दी और स्वयं

राजदूत बनकर कौरवों के दरबार में गये। युधिष्ठिर के अतिरिक्त शेष पांडव इस बात के बहुत विरोधी थे, विशेषकर भीम। इस नाटक की कथा का आरम्भ यहीं से होता है।

: १ :

एक दिन भीम दुर्योधन के अत्याचारों की बात याद करके बहुत गुस्सा हो रहे थे और सहदेव उनको बारबार शान्त रहने के लिए कह रहे थे। इतने में उन्हें पता चला कि युधिष्ठिर केवल पांच गांव लेकर संधि करने को तैयार हैं। उनका क्रोध और भी भभक उठा। कौरवों की क्रूरता से वह बहुत चिढ़े रहते थे और दुर्योधन का नाम सुनते ही उनका खून खौलने लगता था। यह देखकर सहदेव ने कहा, "आप नहीं जानते कि आपकी इस चेष्टा से बड़े महाराज को कितना दुःख होगा!"

भीम ने व्यंग करते हुए उत्तर दिया, "दुःख और सो भी बड़े महाराज को! तुम कैसी बातें करते हो? वे दुःख करना जानते ही नहीं। भरी सभा में द्रौपदी को नंगा किया जाते हुए उन्होंने देखा, हम लोगों को वल्कल पहने वन में किरातों के साथ रहते हुए देखा, विराटपुर में कीचक को द्रौपदी पर कुदृष्टि डालते हुए देखा, तब उन्हें दुख हुआ? वे मुझपर भले ही क्रुद्ध हों, पर कौरवों पर आज भी उनकी नाराजी नहीं है। तुम उनसे जाकर कह दो कि अब मैं उनकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकूँगा। इस रक्त की प्यासी गदा से कौरवों को आज ही समाप्त कर दूँगा।" यह कहकर भीम अपने अस्त्र लेने

के लिए तेजी से शस्त्रागार की ओर चल पड़े, परन्तु आवेश में होने के कारण वे द्रौपदी के भवन में पहुंच गए। सहदेव के बतलाने पर उन्हें अपनी भूल मालूम हुई, पर इससे वे प्रसन्न ही हुए और अन्दर चले गए।

वहां पर दो आसन बिछे हुए थे। सहदेव ने कहा, "आप यहाँ बैठकर कृष्णागमन की प्रतीक्षा कीजिए।"

सहदेव ने तो कहा द्रौपदी की प्रतीक्षा करने को, परन्तु गुस्से में होने के कारण भीम समझे कि वह भगवान् कृष्ण की प्रतीक्षा करने को कह रहा है। कृष्ण का नाम सुनकर उन्हें संधि की बात याद आ गई और वे फिर महाराज की निन्दा करने लगे।

इसी समय आँखों में आंसू भरे द्रौपदी वहां आई, परन्तु भीम इतने बेचैन थे कि उनका ध्यान उसकी ओर नहीं गया और वह अपनी धुन में बोलते रहे :

"यदि महाराज युधिष्ठिर संधि कर भी लें तो क्या मैं कौरवों को युद्ध में मारूंगा नहीं ? क्या दुःशासन की छाती से निकला हुआ रुधिर नहीं पिऊंगा ? दुर्योधन की जंघाएं नहीं तोड़ूंगा ?"

सहदेव ने भीम को संधि का असली अर्थ समझाने की कोशिश की, पर उन्होंने कुछ भी नहीं सुना। गुस्से में भरे वे बोलते गए, बोलते गए, "शत्रुओं का नाश करने में तुम्हें लाज आती है, पर जब भरी सभा में द्रौपदी का अपमान किया गया था तब तुम्हें लाज नहीं आई थी !"

द्रौपदी को यह सुनकर बड़ी खुशी हुई, पर भीम को

अब भी उसके आने का पता न था। उन्होंने सहदेव से पूछा, "द्रौपदी अभी तक नहीं आई। कबतक राह देखें ?"

सहदेव बोला, "पीछे देखिए। कौन बैठी हैं ?"

भीम ने मुड़ कर देखा और बोले, "क्षमा करना देवी।"

और उन्होंने द्रौपदी को अपने पास बिठाकर पूछा, "आज तुम इतनी उद्विग्न क्यों हो रही हो ?"

द्रौपदी का संकेत पाकर दासी ने बताया कि आज यह माता कुन्ती के साथ महारानी गांधारी के चरण छूने गई थीं। लौटते समय दुर्योधन की पत्नी भानुमती ने इनको सुनाते हुए कहा कि पांचाली के पति तो सिर्फ पांच गांव लेकर संधि करने को तैयार हैं। अब यह बाल क्यों नहीं बांधती ? यह सुनकर मैंने कह दिया कि जब तक रानी भानुमती के बाल नहीं खुलेंगे तबतक हमारी महारानी बाल कैसे बांध सकती हैं ?

भीम को दासी की बात से बड़ा सन्तोष हुआ। उसको इनाम में अपने शरीर के आभूषण देते हुए द्रौपदी से बोले, 'पांचाली तुम चिन्ता न करो। मैं जल्दी ही अपनी गदा से दुर्योधन की जांघ तोड़ूंगा और उससे निकले हुए खून से तुम्हारी वेणी बांधूगा।"

द्रौपदी ने सुना, पर उसका उद्वेग शांत नहीं हुआ। वह बोली, "आपके लिए तो कुछ भी कठिन नहीं है, पर आपके सब भाई चाहें तब न !"

जिस समय ये बातें हो रही थीं उसी समय खबर मिली कि श्रीकृष्ण दुर्योधन की सभा से निराश होकर लौट

आये हैं। यह भी मालूम हुआ कि उस दुष्ट ने उन्हें पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह सफल न हो सका।

: २ :

पांडव-सेना युद्ध के लिए तैयार होने लगी। भीम युद्ध के लिए चले तो द्रौपदी आँखों में आँसू भरकर बोली, "नाथ, आपकी विजय हो! आप पांचों भाई रणभूमि से सकुशल लौट आवें। पर मेरी आपसे एक विनती है कि जोश में आप आपे से बाहर न हो जायँ, जिससे शत्रुओं को कपट-युद्ध करने का अवसर मिले। आवेश को रोककर सावधान रहें।"

भीम ने कहा, "चिन्ता न करो, देवी! पांडुपुत्र भीषण संग्राम में भी विचलित नहीं होते।"

कौरवों-पांडवों का युद्ध शुरू हो गया। जब भीष्मपितामह का पतन हो गया तो द्रोणाचार्य कौरवों के सेनापति हुए। एक दिन उन्होंने ऐसी व्यूह-रचना की कि जिसे अर्जुन ही तोड़ सकता था और वह वहां से बहुत दूर था। जोश में आकर अभिमन्यु ने अपने कुछ वीरों की सहायता से व्यूह में प्रवेश किया। व्यूह में पहुंचने पर एक साथ सात कौरव महारथियों से उसका सामना हुआ और वह उनसे लड़ता हुआ मारा गया। इस समाचार से दुर्योधन को बड़ी खुशी हुई और अपने वीरों को बधाई देने के लिए वह लड़ाई के मैदान की ओर चला। पर रास्ते में उसे भानुमती का ध्यान आ गया। उसने कंचुकी को भानुमती की तरफ चलने को कहा। उस समय महारानी भानुमती अपने पति की विजय-

कामना के लिए पूजा कर रही थी। उन्हें देख कंचुकी ने मन-ही-मन कहा, "महारानी, धन्य हैं जो महाराज की विजय-कामना के लिए पूजाव्रत में लगी हैं और महाराज हैं कि ···"

दुर्योधन ने कंचुकी को युद्ध के लिए रथ तैयार करने को भेज दिया और स्वयं भानुमती के पास चले। भानुमती सखियों से घिरी बैठी हुई थी। रात में उसने कोई बुरा स्वप्न देखा था। दुःखित होकर वह उसी की चर्चा कर रही थी। दुर्योधन ने समझा कि वे आपस में कोई सलाह कर रही हैं। इसलिए वह छिपकर उनकी बातचीत सुनने लगा।

भानुमती कह रही थी, "आज मैंने स्वप्न में देखा कि एक दिव्य आकृति वाले नकुल ने सौ सांपों को मार डाला और फिर लता-मंडप में आकर मेरा आंचल खींचने लगा तो मैं भी उसपर रीझ गई।"

यह सुनकर दुर्योधन का पारा चढ़ गया। वह समझा कि भानुमती माद्रीपुत्र नकुल की बात कह रही है। उसने दोनों का वध करने का विचार किया। तभी भानुमती ने कहा, "फिर में मंगल-वाद्य सुनकर जाग उठी।" यह सुनकर दुर्योधन का सन्देह जाता रहा। वह सोचने लगा कि यह तो सपना था। बड़ा अच्छा हुआ जो क्रोध में आकर मैंने अनुचित काम नहीं कर डाला।

सखियों ने भानुमती को बताया कि यह सपना अच्छा नहीं है। देवताओं की पूजा करके और ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर इसके बुरे असर को दूर किया जा सकता है।

सूर्योदय हो गया, यह देख भानुमती ने कहा, "अरी तरलिके, मेरा पूजा-पात्र और पुष्पादि ले आ। मैं सूर्य भगवान की पूजा कर लूं।"

दासी पूजा-सामग्री ले आई और भानुमती सूर्य की पूजा में लग गई।

दुर्योधन ने सोचा कि ऐसे समय में भानुमती से मिलना अच्छा होगा। उसने चुपचाप रानी के पास पहुंचकर संकेत से दासियों को हटा दिया और पूजा-पात्र लेकर स्वयं रानी के पास खड़ा हो गया। भानुमती आँख बन्द किए पूजा कर रही थी। उसी अवस्था में उन्होंने चढ़ाने के लिए फूल मांगे। दुर्योधन जब फूल देने लगा तो रानी के सुख-स्पर्श के कारण फूल धरती पर बिखर गये। इसपर भानुमती बहुत बिगड़ी और डांटती हुई बोली, "तुम बड़ी लापरवाह हो।" पर जब उसने आँखें खोलीं सो वहाँ दुर्योधन को खड़ा पाया। वह लजा गई। दुर्योधन ने हँसते हुए कहा, "इस प्रकार की सेवा में मैं चतुर नहीं हूँ, रानी।"

भानुमती कहने लगी, "मैं आज आपकी कल्याण-कामना के लिए व्रत कर रही हूं।"

दुर्योधन बोला, "मैंने तुम्हारे सपने का हाल सुन लिया है। पर दुर्योधन-जैसे पुरुषसिंह की रानी होकर तुम्हें इस प्रकार डरना नहीं चाहिए।"

भानुमती को दुर्योधन इस प्रकार आश्वासन दे ही रहा था कि एकाएक भयंकर आंधी आगई। देखते-देखते धूल के मारे चारों ओर अंधेरा छा गया और घोर गर्जन

होने लगा। रानी डर गई। इसलिए राजा उसको लेकर महल में चले गए।

इतने में कंचुकी छबराया हुआ महल में आया और कहने लगा, "महाराज, टूट गई।"

"क्या टूट गई ?" दुर्योधन ने पूछा।

कंचुकी ने उसी अस्थिर वाणी में कहा, "महाराज भीम ने तोड़ दी।"

"क्या बकता है ?" दुर्योधन झुंझलाकर बोला।

"महाराज, भीम-पवन ने आपकी रथ-ध्वजा तोड़ दी।" कंचुकी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया।

दुर्योधन बोला, "इसमें घबराने की क्या बात है ? ऐसे जोर की आंधी ने रथ की एक मामूली ध्वजा तोड़ दी तो क्या हुआ ? जाओ शोर मत मचाओ।"

कंचुकी का जाना था कि जयद्रथ की माता और दुःशला रोती हुई वहां आ गई। दुर्योधन ने पूछा, "इतनी क्यों घबरा रही हो ? सिन्धुराज कुशल से तो हैं ?"

रोती हुई जयद्रथ की माता ने उत्तर दिया, "कुशल कैसी ? आज अर्जुन ने सूर्य अस्त होने के पहले ही जयद्रथ को मार डालने की प्रतिज्ञा की है।"

दुर्योधन ने शांत भाव से कहा, "आप दुखी न हों। अर्जुन में इतनी शक्ति कहां है कि वह कौरव-राज की भुजाओं से रक्षित जयद्रथ का बाल भी बांका कर सके ! भरी सभा में जब मैंने द्रौपदी का वस्त्र खिचवाया था तब उसका क्रोध कहाँ गया था ?"

"यह तो मैं नही जानती, पर प्रतिज्ञा पूरी न होने

पर अर्जुन ने प्राण त्यागने का प्रण किया है ।" दुःशला ने कहा ।

यह सुनकर दुर्योधन और भी प्रसन्न हुआ । बोला, "ऐसी बात है तो समझ लीजिए पांडव नष्ट हो गए । अब तो जयद्रथ मैदान में धनुष तानकर खड़े हो सकते हैं । कोई उनका सामना नहीं कर सकता । आप शंका न करें । मैं स्वयं जा रहा हूं । देखूं कौन उनका अनिष्ट कर सकता है ?"

इस प्रकार उन लोगों को आश्वासन देता हुआ दुर्योधन रणभूमि की ओर चला गया ।

: ३ :

उस दिन अभिमन्यु के वध से क्रुद्ध होकर पांडवों ने बड़ा भीषण युद्ध किया और अपनी प्रतिज्ञानुसार अर्जुन ने सूर्यास्त से पहले जयद्रथ का वध कर डाला । यही नहीं, द्रोणाचार्य के बचाते-बचाते उन्होंने कौरवों के कई और प्रसिद्ध वीरों को भी मार डाला । कर्ण जैसे वीर भी उनके सामने न ठहर सके ।

यह भीषण दृश्य देखकर अश्वत्थामा ने सोचा कि शायद पांडव वीरों ने अपनी ताकत के घमण्ड में, मर्यादा का उल्लंघन करके, पिताजी का क्रोध प्रज्वलित कर दिया है । तभी वे शिष्य-प्रेम को एक ओर रखकर पांडव-सेना का संहार करने पर तुल गए हैं । यह सोच वह अपना रथ लेकर लड़ाई का रंग-ढंग देखने चला, पर उसकी बांई आँख फड़कने लगी । उसने देखा कि कौरव-सेना डर के मारे इधर-उधर भाग रही है । वह सेना में घुस

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1.

पड़ा और सैनिकों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करने लगा। इतने में उसने सुना, "अब तुम्हारे पिता कहाँ हैं ?"

यह सुनकर अश्वत्थामा उत्तेजित होकर बोला, "अरे दुष्टो, तुम यह कैसी बात कह रहे हो ? अभी तो प्रलय-काल का कोई भी चिन्ह नहीं दिखाई देता। न सूर्य का ताप अभी प्रचंड हुआ है, न पवनों का वेग प्रलयंकारी हुआ है। मेघों ने भी अभी भयंकर वर्षा नहीं शुरू की है। तब मेरे पिता की मृत्यु कैसे सम्भव हो सकती है ?"

उसी समय रक्षा की पुकार करता हुआ द्रोण का सारथी अश्वसेन वहां आ पहुंचा। उसने अश्वत्थामा को बताया कि उसके पिता मारे गए। यह सुनते ही वह बेहोश होकर रथ में गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद होश आने पर उसने पूछा, "कैसे मारे गये ? क्या गुरु-दक्षिणा के रूप में भीम ने उनपर गदा-प्रहार किया, या उनका वध अर्जुन के बाणों से हुआ, या श्रीकृष्ण ने विचलित होकर सुदर्शन चक्र से उनका अन्त कर डाला ?"

सारथी ने बताया कि इनमें से एक भी बात नहीं हुई। हाथ में शस्त्र रहते उनके सामने कौन टिक सकता था ? लड़ाई चल रही थी। उसी समय युधिष्ठिर ने जोर से कहा कि अश्वत्थामा मारा गया, लेकिन धीरे से कह दिया—आदमी नहीं, हाथी। आचार्य बाद के अस्पष्ट शब्द नहीं सुन पाये और सत्यवादी युधिष्ठिर का विश्वास करके उन्होंने शस्त्र गिरा दिए। उनकी आंखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। तब कायर धृष्टद्युम्न ने अपनी तलवार

से उनका सिर काट लिया।"

यह सुनकर अश्वत्थामा को बड़ा दुःख हुआ और वह फिर मूर्च्छित हो गया। होश आने पर कृपाचार्य ने उसे बहुत समझाया, पर उसे धैर्य कहाँ ? दुःख में वह बारम्बार आत्महत्या करने की बात कहने लगा। लेकिन जब पिता की मृत्यु का ठीक कारण उसकी समझ में आया तो वह क्रुद्ध होकर पांडवों को धिक्कारने लगा। बोला, "पिता के वध से क्रुद्ध होकर परशुराम ने जो कुछ किया था, वह सब जानते हैं। मैं भी उसी प्रकार शत्रुओं के रक्त से पितरों का तर्पण कर सकता हूँ।"

उसने सारथी को रथ लाने की आज्ञा दी। तभी कृपाचार्य ने कहा, "बेटा, तुम सबकुछ कर सकते हो, परन्तु मैं तुम्हें कौरव-सेना का सेनापति देखना चाहता हूँ। दुर्योधन तुम्हारी राह देख रहे होंगे। चलो, उनके पास चलें।"

उधर कर्ण और दुर्योधन आपस में युद्ध की स्थिति पर चर्चा कर रहे थे। दुर्योधन कह रहा था, "अंगराज, आज आचार्य ने पुत्र की मृत्यु का समाचार पाकर जो शस्त्र-परित्याग कर दिए, वह उचित नहीं था। उन्हें शत्रु से बदला लेना चाहिए था।"

कर्ण बोला, "आचार्य की इच्छा अश्वत्थामा को चक्रवर्ती सम्राट बनाने की थी, परंतु जब उन्होंने देखा कि ऐसा नहीं हो सकता तो शस्त्रों का परित्याग कर दिया। इतना ही नहीं, उस समय इन्होंने दोनों पक्ष के वीरों को युद्धभूमि में उपेक्षा के साथ नष्ट होते हुए देखा और

अन्त में जयद्रथ-वध की भी उपेक्षा की। इनके बाल-सखा द्रुपद इनके विचारों को जानते थे, तभी तो उन्होंने इन्हें अपने राज्य से निकाल दिया था।"

इतने में अश्वत्थामा और कृपाचार्य वहां आ पहुंचे। उन्हें देखकर दुर्योधन उठ खड़ा हुआ और आचार्य के मारे जाने पर अपनी समवेदना प्रकट करने लगा।

अश्वत्थामा बोला, "मेरे जीतेजी पिताजी का ऐसा अपमान हुआ, यह घोर लज्जा की बात है।"

इसपर कर्ण ने कहा, "उन्होंने स्वयं ही शस्त्र डाल कर अपनी मौत को बुलाया। इसमें कोई क्या करे ?"

अश्वत्थामा बोला, "कोई क्या करे ! अच्छा देखो, मैं क्या करता हूँ ? पांडु और पांचाल कुल के जिन वीरों ने घमंड में आकर यह बुरा काम किया है, मैं उन सबका सफाया कर डालूँगा। हे परशुराम के शिष्य, यह वही प्रदेश है जहाँ भगवान परशुराम ने शत्रुओं के खून से तालाब भरे थे। मुझे भी वे अस्त्र गुरु-परम्परा से प्राप्त हैं। मैं भी वही काम कर सकता हूं।"

कृपाचार्य ने अश्वत्थामा की बात का समर्थन करते हुए दुर्योधन से उसे आचार्य के बाद कौरव-सेना का सेनापति बनाने को कहा। दुर्योधन बोला, "आपने बात तो ठीक ही कही है, परन्तु मैं सेनापति-पद के लिए कर्ण को वचन दे चुका हूँ।"

यह सुनकर कृपाचार्य और अश्वत्थामा को बड़ा बुरा लगा। अपनी बात मनवाने के लिए उन्होंने दुर्योधन पर बहुत जोर डाला, पर दुर्योधन किसी भी तरह राजी

न हुआ। बात बढ़ गई। अंत में अश्वत्थामा ने जब कर्ण को 'सूतपुत्र' और कायर कहा तो उससे न रहा गया। बोला, "मैं सूत या सूतपुत्र कोई भी होऊं, कुल और जन्म तो भाग्य के अधीन होते हैं। पराक्रम मेरे अपने बस की बात है वह तुम देख लेना।" यह कहकर उसने भी अश्वत्थामा को बुरा-भला कहा। बोला, "अरे मूर्ख, तेरे पिता ने हथियार डाल दिए थे तो भी क्या वे और तरीकों से शत्रुओं का सामना नहीं कर सकते थे? पर वे तो मैदान में स्त्रियों की तरह बैठे रहे और बाल खींचे जाने पर भी उन्होंने चूं तक नहीं की।"

यह सुनकर अश्वत्थामा क्रोध के मारे कांपने लगा। बोला, "बढ़-बढ़कर बातें क्यों बना रहा है? ले, मैं तेरे सिर पर लात जमाता हूँ। ताकत हो तो रोक।"

यह कहकर वह कर्ण को लात मारने चला, पर कृपाचार्य और दुर्योधन ने उसे रोक लिया। तभी कर्ण तलवार खींचकर उसकी ओर बढ़ा और बोला, "तू ब्राह्मण होने के कारण अवध्य है, लेकिन मैं तेरे इस उठे हुए पैर को तो काट ही डालूँगा, जिससे तेरा गर्व नष्ट हो जाय।"

अश्वत्थामा बोला, "यदि ब्राह्मण होने के कारण ही मुझे मारने से रुके हो तो यह लो।" यह कहकर उसने अपना जनेऊ तोड़ डाला और कर्ण को युद्ध के लिए ललकारा। दोनों लड़ने को तैयार हो गये। कृपाचार्य और दुर्योधन ने फिर दोनों को रोका और समझाया।

पर अश्वत्थामा नहीं माना। बोला, "कुछ भी हो,

इस सूतपुत्र का घमंड तो एक बार चूर करूँगा ही। आज नहीं तो फिर कभी सही।"

कृपाचार्य बोले, "बेटा, सेना के प्रधान वीर से लड़ने का यह अवसर नहीं है।"

"ठीक है," अश्वत्थामा ने कहा, पर जबतक कर्ण जीवित है, मैं लड़ाई में शामिल नहीं होऊंगा।" यह कहकर उसने अपनी तलवार फेंक दी।

कर्ण हँसकर बोला, "शस्त्र-त्याग की रीति तो तुम्हारे कुल में चली आई है। आज तलवार फेंक कर तुमने कौन-सी बड़ी बात की है ?"

वे एक-दूसरे पर कटाक्ष कर ही रहे थे कि एक ओर से यह घोर गर्जन सुनाई दिया :

"अरे दुष्ट, द्रौपदी के केश और वस्त्र खींचने वाले पापी ! बहुत दिन बाद तू मेरी पकड़ में आया है। ले अब कहां जायगा ! आज यह पापी दुःशासन, जिसकी छाती का खून पीने की मैंने प्रतिज्ञा की थी, मेरी पकड़ में आ गया है। जिसमें ताकत हो, आ जाय और इसे बचाए।"

यह सुनकर कर्ण की हँसी उड़ाते हुए अश्वत्थामा बोला, "सेनापति कर्ण, लो तुम्हारी परीक्षा का समय आ गया। दुःशासन को भीम के चंगुल से बचाओ तो तुम्हारी वीरता जानें !"

कर्ण आवेश में आकर बोला, "मेरे जीतेजी वह दुःशासन की छांह भी नहीं छू सकता !"

दुर्योधन ने भी इसी प्रकार कहा और दोनों तेजी से रणभूमि की ओर चले गए। उनके जाने के बाद ही

अश्वत्थामा ने फिर कोलाहल सुना। उसे विश्वास हो गया कि भीम ने दुःशासन का खून पी लिया है। अब उसे कर्ण से झगड़ा करने का पछतावा होने लगा। कृपाचार्य को युद्ध-भूमि में भेजकर वह स्वयं अपने तम्बू की ओर चला गया।

: ४ :

उधर दुःशासन को बचाते हुए दुर्योधन बुरी तरह घायल और मूर्च्छित हो गया। उसका सारथी उसे रथ में डालकर सेना के पीछे एक सुरक्षित जगह ले गया। सेना भयंकर युद्ध कर रही थी। कृपाचार्य कौरव-सेना की हिम्मत बढ़ाने के लिए बाणों की वर्षा कर रहे थे। उधर भीम दुःशासन का खून पीकर सिंहनाद करता हुआ दुर्योधन को ललकार रहा था। सारथी ने सोचा कि कहीं भीम दुःशासन-जैसा व्यवहार दुर्योधन के साथ भी न करे। इसी भय से वह रथ को और भी दूर एक सरोवर के किनारे ले गया। वहां शीतल वायु के झोंके आ रहे थे। फिर भी बड़ी देर तक दुर्योधन को होश नहीं आया। जब उसकी चेतना लौटी तो वह बोला, "मेरे रहते भीम की क्या मजाल है, जो दुःशासन का खून पीने की प्रतिज्ञा पूरी कर सके!"

और उसने सारथी से रथ को दुःशासन के पास ले चलने को कहा। पर जब उसे मालूम हुआ कि भीम अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर चुका तो वह कटे पेड़ की भांति गिर पड़ा और दुःशासन की याद करता हुआ मूर्च्छित हो गया। होश आने पर वह फिर विलाप करने लगा।

इतने में अर्जुन के बाणों से घायल सुन्दरक नाम का एक सैनिक दुर्योधन को ढूंढ़ता हुआ वहां आ पहुंचा। उससे मालूम हुआ कि अर्जुन से भयंकर युद्ध करते हुए कर्ण का पुत्र वृषसेन स्वर्ग सिधार चुका है। वह युद्ध इतना विलक्षण था कि उसे देखने के लिए एक बार तो कर्ण और भीम ने भी अपना युद्ध रोक दिया था। दुर्योधन के लिए यह समाचार और भी चोट पहुंचानेवाला था। वह फिर मूर्च्छित हो गया। हवा करने पर उसे होश हुआ तो सुन्दरक बोला, "पुत्र की मौत से दुःखित होकर अंग-राज बहुत रोये, पर शीघ्र ही संभले और फिर युद्ध में लग गए। उसी बीच अपने शरीर के रक्त से उन्होंने आपके लिए यह पत्र लिखा है।"

यह कहकर उसने एक पत्र दुर्योधन को दे दिया। पत्र में लिखा था :

"स्वस्ति, युद्धभूमि से कर्ण महाराज दुर्योधन को गले लगाकर निवेदन करता है कि आपका मुझपर बड़ा भरोसा था। आप कहा करते थे कि युद्ध-विद्या में कर्ण से बढ़कर कोई नहीं है। वह मुझे अपने भाइयों से भी अधिक प्रिय है। वह पांडवों को अवश्य जीतेगा। पर मैं दुःशासन का खून पीते हुए भीम को न रोक सका। अब आप मुझसे कोई आशा न रखें। स्वयं अपने भुजबल से शत्रु का नाश करें या फिर स्त्रियों की तरह आंसू बहा-कर दुःखों का निवारण करें।"

यह पढ़कर दुर्योधन और भी दुःखी हुआ। उसे जब यह पता चला कि कर्ण भयंकर युद्ध करने के लिए तैयार

है तो उसने कहला भेजा, "ऐसा दुःसाहस न करो। हम लोगों का समान संकल्प था। अब हम दोनों पांडवों का वध करके, बंधु-बांधवों के वध पर रोते, उन्हें जलांजलि देकर इस अधम शरीर को छोड़ देंगे। तुम्हारा पुत्र वृष-सेन मारा गया और मेरा भाई दुःशासन भी। हम लोगों का सुख-दुःख समान है। कौन किसको धैर्य बँधाये ?"

सुन्दरक यह संदेश लेकर कर्ण के पास गया। इधर दुर्योधन भी दूसरा रथ मंगाकर युद्धभूमि में जाने के लिए तैयार हुआ। तभी सूचना मिली कि माता-पिता आ रहे हैं। दुर्योधन बहुत दुःखी हुआ और शर्म के मारे उसने कहीं भाग जाना चाहा, पर सारथी ने समझा बुझाकर रोक दिया। दुर्योधन कहने लगा, "सवेरे युद्ध में आते समय मैं और दुःशासन दोनों उनके पैर छूने गए थे। उन्होंने दोनों को आशीर्वाद दिया था। अब अकेला उनसे क्या मुंह लेकर मिलूं !"

: ५ :

धृतराष्ट्र और गान्धारी दुर्योधन को ढूंढ़ते हुए वहाँ आ गए। संजय उनके साथ था। उसने देखा कि वट-वृक्ष के नीचे दुर्योधन लज्जित एवं खिन्न बैठा है। उसने कहा, "महाराज, माताजी और बड़े महाराज आ रहे हैं। आप उनसे मिल लीजिए।" दुर्योधन सिर झुकाए माता-पिता के पास गया। उन्होंने उसे गले लगाया। गांधारी ने पूछा, "बेटा, तुम बोल क्यों नहीं रहे ? क्या अधिक चोट लगी है ? तुम्हीं नहीं बोलोगे तो क्या तुम्हारे दूसरे भाई बोलने आवेंगे ?"

दुर्योधन ने दुःखित होकर कहा, "माताजी, क्या कहूँ। मैं अपने भाइयों के वध का बदला पांडवों से न ले सका। तुम अब भी इस कुल-कलंकी को अपना पुत्र मानती हो ?"

गांधारी बोली, "बेटा, इस प्रकार कातर मत बनो। तुम्हीं पर हमारी आशायें टिकी हैं। परमात्मा तुम्हें चिरायु करे। मुझे राज्य या विजय से कुछ नहीं लेना।"

दुर्योधन ने कहा, "मां, तुम्हें आज क्या हो गया है ? क्षत्राणी होकर ऐसे शब्द कह रही हो ! तुम्हें सौ पुत्रों के मरने का खेद नहीं है, परन्तु मुझ-जैसे पापी के प्राणों की इतनी चिन्ता है !"

गांधारी और धृतराष्ट्र ने उसे बहुत समझाया और पांडवों से संधि कर लेने की सलाह दी। उन्हें भरोसा था कि युधिष्ठिर से कहा जायगा तो वे तुरन्त तैयार हो जायंगे, पर दुर्योधन ने कहा, "महाराज, जब कृष्ण स्वयं संधि का प्रस्ताव लेकर मेरे पास आये थे तब मैंने किसी भी शर्त पर उसे मंजूर नहीं किया था। अब जब मैं हार रहा हूँ, मेरे सब भाई मारे जा चुके हैं, तब मैं स्वार्थवश उसके लिए कैसे तैयार हो सकता हूँ ? आप युधिष्ठिर की बात कहते हैं ! उसने कह रखा है कि यदि उसका एक भी भाई मारा गया तो वह अपने प्राण दे देगा। लेकिन मेरे तो सौ भाई मारे जा चुके हैं। मैं किस मुंह से सन्धि करूं ? अब तो मेरा यही विचार है कि दुःशासन का वध करनेवालों को गदा से मारकर चील-कौओं के खाने के

लिए फेंक दूं।"

धृतराष्ट्र ने कहा, "बेटा, यदि तुम मारना ही चाहते हो तो गुप्त रूप से मारने का कोई उपाय सोचो।"

लेकिन दुर्योधन ने शत्रु को छिपकर मारना ठीक नहीं समझा, क्योंकि उसके भाइयों को शत्रुओं ने उसकी आंखों के सामने मारा था।

इधर यह बातें हो रही थीं, उधर रणभूमि में भयंकर कोलाहल सुनाई पड़ने लगा। पता लगाने पर मालूम हुआ कि महावीर कर्ण भी लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गये। यह सुनकर दुर्योधन मूर्च्छित हो गया। जब माता-पिता की परिचर्या से थोड़ी देर में स्वस्थ हुआ तो बोला, "मुझे दुःशासन के या दूसरे बंधुओं के मरने का इतना दुःख नहीं है, जितना प्रिय मित्र कर्ण के मारे जाने का है। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जिसने कर्ण को मारा है, मैं उसके वंश का अंत करके मरूंगा।"

जब उसे पता लगा कि जिस समय युद्ध करते हुए कर्ण के रथ के पहिये कीचड़ में धंस गये थे उस समय कृष्ण की प्रेरणा से, अर्जुन ने उसका वध कर डाला तो वह क्रोध से भभक उठा और तुरन्त युद्ध-भूमि में जाने को तैयार हो गया। धृतराष्ट्र बोले, "दुस्साहस सदा बुरा होता है। भीम की भयंकर गदा का स्मरण करके मेरा हृदय दहल उठता है। बेटा, तुम तो सीधे हो, परन्तु पांडव बड़े कपटी हैं। तुम समझ से काम लो।"

गांधारी ने कहा, "क्या तुम उसी भीम से युद्ध करना चाहते हो, जिसने मेरे बाकी पुत्रों को नष्ट किया है?"

दुर्योधन ने उन्हें समझाते हुए कहा, "माताजी, कर्ण को जिस पापी ने मारा है उसी अर्जुन से मैं युद्ध करूंगा, भीम से नहीं। आप डरें नहीं।"

उसने सारथी को रथ लाने की आज्ञा दी, लेकिन इतने में फिर जोर का कोलाहल सुनाई दिया। जीत की खुशी में सिंहनाद करते हुए दो वीर उस तरफ से गुजरे। सारथी ने आकर बताया कि अर्जुन और भीम इधर आ रहे हैं। वे महाराज दुर्योधन को ढूंढ रहे हैं।

उधर जब अर्जुन को मालूम हुआ कि महाराज धृतराष्ट्र और गांधारी इधर ही हैं तो उसने भीम से कहा, "यहां से लौट चलें। वृद्ध माता को अधिक चोट पहुंचाना ठीक नहीं है।"

भीम ने कहा, "नहीं अर्जुन, उनका शिष्टाचार-पूर्वक अभिवादन किये बिना चला जाना सदाचार का उल्लंघन है।"

उन दोनों ने वृद्ध माता-पिता के सामने जाकर प्रणाम किया। भीम के मुंह से पराक्रम की बातें सुनकर धृतराष्ट्र को अच्छा नहीं लगा। दुर्योधन को भी क्रोध आ गया। वह बोला, "भीम, बूढ़े महाराज को क्यों सता रहे हो? वैर का कारण तो मैं हूँ। मुझे जीते बिना तुम्हारा घमंड व्यर्थ है।"

यह कहकर वह भीम पर लपका। भीम भी झपटा। बड़ी कठिनाई से धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को और अर्जुन ने भीम को रोका। तब वे वाक्युद्ध करने लगे। उसी समय यदि सूर्यास्त न हो गया होता और महाराज युधिष्ठिर

युद्ध बन्द करने की घोषणा न कर देते तो उनमें युद्ध होना अनिवार्य था।

भीम और अर्जुन वहां से चले आये। थोड़ी देर में क्रोध से उन्मत्त अश्वत्थामा के वहां आने की सूचना मिली। धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से कहा, "बेटा, गुरुपुत्र का स्वागत करो। वह पिता से भी बढ़कर वीर है और चिरं-जीवी है।" गांधारी ने भी यही कहा। पर दुर्योधन ने उत्तर दिया, "अभिन्न मित्र कर्ण का वध चाहनेवाले से मुझे कोई आशा नहीं।" अश्वत्थामा के आनेपर भी उसने यही कहा, "आप कर्ण की मृत्यु के बाद ही युद्ध में कूदे हैं। थोड़ा रुकिये। मुझे भी मर जाने दीजिये। मुझमें और कर्ण में कोई अन्तर नहीं है?"

यह सुनकर अश्वत्थामा ने सोचा कि अबतक इसके मन में कर्ण के प्रति पक्षपात बना हुआ है। इसलिए उसने कहा, "राजन् जो आप कहते हैं वही होगा।" और वह चला गया।

धृतराष्ट्र को यह बुरा लगा। उन्होंने दुर्योधन को बहुत समझाया, पर वह नहीं माना। तब गांधारी ने संजय के द्वारा अश्वत्थामा को कहला भेजा, "तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम मेरी गोद में खेले हो। तुमने मेरा दूध पिया है। दुर्योधन इस समय आपत्ति में है। उसके कटु वचनों का खयाल मत करना।" धृतराष्ट्र ने भी उससे दुर्योधन की सहायता करने को कहा। उसके बाद वे सब मद्रराज शल्य के शिविर की ओर चले गये।

H-000677

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
BANGALORE-1.

015,2BHA
152w3N56;1

: ६ :

जब दुर्योधन ने देखा कि सारी सेना का संहार हो गया है तो उसे बड़ा दुःख हुआ और वह व्यास सरोवर में जाकर छिप गया। पांडव-पक्ष के लोगों के खोजने पर भी वह किसी को न मिला। युधिष्ठिर और द्रौपदी अपने शिविर में बैठे हुए इसी बात की चिंता कर रहे थे। तभी उन्हें सूचना मिली कि भीम ने प्रतिज्ञा की है कि "या तो आज ही दुर्योधन को मार डालूँगा, नहीं तो मैं स्वयं मर जाऊंगा।" इस नई प्रतिज्ञा ने उन्हें परेशान कर दिया। उन्होंने सहदेव को कहला भेजा कि भीम की प्रतिज्ञा को झूठा करने के लिए दुर्योधन कहीं छिप गया मालूम होता है। इसलिए डोंड़ी पिटवाकर इस बात की घोषणा कर दी जाय कि जो कोई उसका पता लगावेगा, उसका सब प्रकार से सम्मान किया जायगा।

सन्देशवाहक उधर गया ही था कि पांचालक वहां आ पहुंचा और युधिष्ठिर को महाराज दुर्योधन का पता लग जाने की सूचना दी। उसने कहा कि भीम और दुर्योधन का घोर युद्ध हो रहा है। पांचालक ने बताया, "जब दुर्योधन का पता न लगनेपर भीम और अर्जुन, यहांतक कि श्रीकृष्ण भी, निराश हो गये उसी समय भीम के पूर्व परिचित एक शिकारी ने आकर बताया कि व्यास सरोवर में दो आदमियों के अन्दर जाने के चिन्ह साफ दिखाई देते हैं। लेकिन उनमें से लौटा एक ही है। दूसरा अन्दर ही मालूम होता है। यह सुन हम लोग तुरन्त वहां जा पहुंचे। श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के पैर के निशानों को

पहचान लिया। तब भीम बड़ी गरज के साथ उसे युद्ध के लिए ललकारते हुए कहने लगे, 'अरे, पापी दुर्योधन, द्रौपदी के बाल खींचनेवाले कुलकलंक, तू अपने को विमल चन्द्रवंश की विभूति बताता है? तेरे हाथ में गदा भी है। दुःशासन का खून पीकर मैं भी मस्त हो रहा हूं। मुझे तू शत्रु भी मानता है। तूने श्रीकृष्ण को बांधने की भी कोशिश की थी। तो फिर अब क्यों डरकर सरोवर में छिपा हुआ है?' यह कहकर भीम गदा लिये सरोवर में कूद पड़े और उसे क्षीरसागर के समान मथ डाला। तब दुर्योधन कालकूट के समान उसमें से निकल आया। कुछ दूरी पर ही उसकी सेना के वीरों के शव पड़े थे। अपनी हार से वह दुखी हो रहा था, यह देख भीम ने उससे कहा, 'अब यह शोक व्यर्थ है। हम पांच में से तुम किसी एक से युद्ध करलो। हम सब मिलकर तुम्हें नहीं मारेंगे।' यह सुनकर दुर्योधन ने भीम से युद्ध करना स्वीकार किया। थोड़ी देर में उन दोनों के बीचभयंकर युद्ध शुरू हो गया। अब भीम की प्रतिज्ञा पूरी होने ही वाली है। भगवान कृष्ण ने मुझे यह कहने को भेजा है कि आप उत्सव मनाने की तैयारी करें।" यह सुनकर युधिष्ठिर ने जयंधर को बुलाया और पांचालक को पुरस्कार देने तथा महोत्सव की तैयारी करने की आज्ञा दी।

: ७ :

इस बीच में चारवाक नामक दुर्योधन का राक्षस-मित्र मुनि-वेष बनाकर युधिष्ठिर के शिविर में आया। द्रौपदी और युधिष्ठिर ने उसका स्वागत किया। पूछे जाने

पर छद्मवेषी मुनि ने बताया कि वह व्यास-सरोवर से आ रहा है, जहां थोड़ी देर पहले भीम और दुर्योधन का युद्ध हो रहा था। युधिष्ठिर ने उत्सुकता से वहां का हाल पूछा तो राक्षस ने बताया, "जब भीम और दुर्योधन का युद्ध हो रहा था तब दोनों के गुरु बलराम यात्रा करते हुए उधर आ निकले। दुर्योधन उनका प्रिय शिष्य है। उन्होंने चुपके से उसे ऐसी चाल बता दी जिससे उसने भीम को मार डाला और इस प्रकार दुःशासन के वध का बदला चुका लिया।"

यह सुनते ही युधिष्ठिर और द्रौपदी एकदम मूर्च्छित हो गये। कुछ देर बाद होश आने पर छद्मवेषी मुनि से आगे का हाल पूछा। उसने बताया कि भीम के मारे जाने के बाद अर्जुन दुर्योधन से लड़ने लगा। बलराम को विश्वास था कि अर्जुन गदा-युद्ध में उतना निपुण नहीं है, जितना दुर्योधन। इसलिए वे श्रीकृष्ण को समझा-बुझा कर अपने साथ द्वारिका ले गये।

युधिष्ठिर और द्रौपदी से आगे का हाल न सुना गया। भीम के वियोग के दुःख से वे विह्वल हो उठे और उसके गुणों को याद करके दारुण विलाप करने लगे। द्रौपदी कहने लगी, "मेरे बालों को बांधने की आपकी प्रतिज्ञा थी तो उसे पूरी करने से पहले आप कैसे चले गये? मैं भी चिता-रोहण करके आपके पास आती हूं।'

उस राक्षस की सलाह से युधिष्ठिर ने दुर्योधन के साथ गदा-युद्ध करके भीम और अर्जुन का अनुसरण करने का निश्चय किया। इस प्रकार वह राक्षस दोनों को

धोखा देकर चुपके से शिविर से निकल गया। द्रौपदी ने सेवकों से लकड़ियां मंगवाईं। स्वयं चिता बनाने लगी। इसी समय दूर पर कुछ कोलाहल-सा सुनाई दिया। शंख-ध्वनि आई। कुछ और बुरी खबर न सुननी पड़े, इसलिए वे दोनों चिता की ओर बढ़े। द्रौपदी ने अपनी माता, सास कुन्ती और सुभद्रा के लिए तथा युधिष्ठिर ने माता और सहदेव के लिए संदेश कहे। जयंधर से कहा कि भाग्य से अगर अर्जुन गदा-युद्ध में विजय पाकर लौटें तो उनसे कहना कि कुछ भी हो, बलराम श्रीकृष्ण के बड़े भाई हैं। उन्होंने जो किया उसपर क्रोध न करें। इसके बाद उन्होंने पूर्वजों को जलांजलि दी और चिता में प्रवेश करने के लिए आगे बढ़े।

उधर भीम दुर्योधन की जांघ तोड़कर, उससे निकले हुए खून से अपने हाथ रंगे, द्रौपदी की खुली वेणी बांधने के लिए यमराज के समान उधर ही चले आ रहे थे। इधर चिता जल रही थी। कंचुकी ने उन्हें दूर से दुर्योधन समझा और वह महाराज युधिष्ठिर को साव-धान करने के लिए दौड़ा। युधिष्ठिर ने समझ लिया कि अर्जुन भी वीरगति को प्राप्त हो चुका है। इससे द्रौपदी और महाराज फिर बेहोश हो गये। भीम पास आ रहे थे और उन्मत्त होकर द्रौपदी को पुकार रहे थे। शिविर के लोग उन्हें अब भी दुर्योधन समझ रहे थे। 'द्रौपदी का अपमान होगा', ऐसा सोचकर वे घबरा उठे। युधिष्ठिर ने संभलकर कंचुकी को आदेश दिया, "धनुष-बाण ले आओ। मैं अभी इस दुष्ट को मार गिराता हूँ।" कंचुकी

चला गया, लेकिन उसके आने में देर हुई तो वह स्वयं ताल ठोककर दुर्योधन को पकड़ने के लिए झपटे। वे द्रौपदी से कहने लगे, "जबतक यह पापी दुर्योधन न मारा जाय, तुम अपने केश मत बाँधना।"

इसी समय भीम वहाँ आ पहुंचे और द्रौपदी से बोले, "अपने हाथों से केश मत बाँधो। ठहरो मैं बांधता हूँ।"

यह कहते हुए वह द्रौपदी के केशों को पकड़ने के लिए झपटे। द्रौपदी डरकर भागी। धर्मराज ने भीम को पकड़ लिया। आवेश और भ्रम के कारण वे उन्हें पहचान न सके और जोर से दबाने लगे। भीम को परिस्थिति समझते देर न लगी। वह बोले, "महाराज, प्रसन्न होइये। क्रोध दूर कीजिए। मैं आपका अनुज भीम हूँ।"

अब तो कंचुकी ने भी भीम को पहचान लिया, पर युधिष्ठिर फिर भी जल्दी नहीं समझ पाये। भीम ने उन्हें शांत करते हुए दुर्योधन के मारे जाने की सूचना दी। अब उन्हें विश्वास हुआ और उन्होंने भीम को गले लगा लिया। भीम फिर द्रौपदी के पास गये और उन्होंने अपने रक्त-रंजित हाथों से उसकी वेणी बांधी।

तबतक कृष्ण और अर्जुन भी वहां आ पहुंचे और सब उनको विजय पर बधाई देने लगे। इन्हीं से युधिष्ठिर को छद्ममुनि के छल की बात का पता लगा।

इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण की देखरेख में युधिष्ठिर का राज्याभिषेक सानन्द सम्पन्न हुआ और पांडवों की सारी प्रतिज्ञाएं पूरी हो गईं।

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

आत्मकथा	(गांधीजी)	५)
प्रार्थना-प्रवचन २ भाग	,,	५।।)
गीता-माता	,,	४)
पंद्रह अगस्त के बाद		१।।), २)
धर्मनीति	,,	१।।), २)
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३।।)
मेरे समकालीन	,,	५)
आत्म-संयम	,,	३)
गीता-बोध	,,	।।)
अनासक्तियोग	,,	१।।)
ग्रामसेवा	,,	।=)
मंगल-प्रभात	,,	।=)
सर्वोदय	,,	।=)
नीति-धर्म	,,	।=)
आश्रमवासियों से	,,	।=)
हमारी मांग	,,	१)
सत्यवीर की कथा	,,	।)
संक्षिप्त आत्मकथा	,,	१) १।।)
हिंद-स्वराज्य	,,	।।।)
अनीति की राह पर	,,	१)
बापू की सीख	,,	।।)
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	,,	१=)
आज का विचार (दो भाग)		।।।)
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	,,	१।।।)
गांधीजी ने कहा था ३ भाग		।।।)
शान्ति-यात्रा	(विनोबा)	१।।)
विनोबा के विचार : २ भाग		३)
गीता-प्रवचन	,,	१),१।।)
जीवन और शिक्षण	,,	२)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१)
ईशावास्यवृत्ति	,,	।।।)
ईशावास्योपनिषद्	,,	=)
सर्वोदय-विचार	,,	१=)
स्वराज्य-शास्त्र	,,	।।)
गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	।=)
भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	।)
राजघाट की संनिधि में		।।=)
विचार-पोथी	,,	१)
सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	।)
जमाने की माँग	,,	=)
मेरी कहानी	(नेहरू)	८)
,, संक्षिप्त	,,	२।।)
हिन्दुस्तान की समस्याएँ	,,	२)
लड़खड़ाती दुनिया	,,	२)
राष्ट्रपिता	,,	२)
राजनीति से दूर	,,	२)
हमारी समस्याएँ	(१ भाग)	।।।)
विश्व-इतिहास की झलक		२१)
सं० हिन्दुस्तान की कहानी		५)
नया भारत	,,	।)
आजादी के आठ साल	,,	।)
गांधीजी की देन	(रा० प्र०)	१।।)
गांधी-मार्ग	,,	=)
महाभारत-कथा	(राजाजी)	५)
कुब्जा-सुन्दरी	,,	२)
शिशु-पालन	,,	।।)
मैं भूल नहीं सकता	,,	२।।)
कारावास-कहानी	(सु. नै.)	१०)
गांधी की कहानी	(लु० फि०	४)
भारत-विभाजन की कहानी		४)
बापू के चरणों में		२।।)
इंग्लैंड में गाँधीजी		२)
बा, बापू और भाई		।।)
गांधी-विचार-दोहन		१।।)
सर्वोदय-तत्व-दर्शन		७)
सत्याग्रह-मीमांसा		३।।)
बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१)
सन्त सुधासार	,,	११)
श्रद्धाकण	,,	१)
अयोध्याकाण्ड	,,	१)

MAHATMA GANDHI MEMORIAL LIBRARY
5, Kumara Park (East), Bangalore-1

DATE LABLE

CL. No. 015,2BHA 152w3N56;1 Accn. No. H.00067)

This book ought to be returned on or before the date last marked below, or fines will be incurred.

Due Date	Ticket No.	Inls.	Due Date	Ticket No.	Inls.

BANGALORE-1.

GANDHI SMARAKA GRANTHALAYA
DATE.................
ACC. No.................
CALL No.................

Mahatma Gandhi Memorial Library
5, Kumara Park (East), Bangalore-1
BOOK CARD
152w3 N56;1
CL No. O15,2BHA Acc. No. H:000677
Author. BHATTANARAYANA ( )( )
Title Veni Samhara.

Ticket No.	Issue Date	Return Date	Ticket No.	Issue Date	Return Date

O15,2BHA
152w3N56;1
H.000677

'संस्कृत साहित्य सौरभ' की पुस्तकें

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुन्तला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानन्द
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार चरित : भाग १
१५. दशकुमार चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमारसंभव
२२. महावीर चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र

मूल्य प्रत्येक का छः आना

३

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना